महाकवि विद्यापति

Date
Page 1

महाकवि विद्यापति कें मैथिली साहित्यक जनक कहल जाइत अछि। ओना तँ मैथिलीक जड़ि बड़ पुरान अछि, मुदा विद्यापतिक समयमे ओ देखार भेल निखारमे आयल। मैथिली साहित्य अपन सर्वोच्च शिखरकें प्राप्त कयल। विश्व साहित्य मध्य अपन स्थान पऔलक। मैथिली एकटा उच्च ओ पुरान भाषा अछि, एकर भाषा साहित्य बड़ पुरान अछि, विश्वक सब भाषाक समक्ष ठाढ़ होयबाक सामर्थ्य अछि ई विद्यापति उजागर कयलनि। हुनक कृति अपन विशिष्ट महत्ताक कारण सभक कहिओ नहि हृदयमे स्थान बनौलक।

महाकवि विद्यापति कविकोकिलक नामसँ सुप्रसिद्ध छथि। महाकविक रचना संस्कृत, अवहट्ठ, मैथिलीमे अछि। संस्कृतमे हिनक भूपरिक्रमा, पुरुषपरीक्षा, लिखनावली, विभागसार, शैवसर्वस्वसार, शैवसर्वस्वसार-प्रमाणभूत-प्रकाश संग्रह, दानवाक्यावली, गंगावाक्यावली, दुर्गाभक्तितरंगिणी, गयापत्तलक, वर्षकृत्य, मणिमञ्जरी नाटक, गोरक्षविजय नाटक, अवहट्ठ मे कीर्तिलता ओ कीर्तिपताका, ओ मैथिलीमे पदावलीक रचना अछि। पदावलीमे हिनक भक्ति, शृंगार, संयोग, वियोग आदि तरहक गीतक संग्रह कयल गेल अछि।

Date 12/30
Page

महाकवि विद्यापति भारतीय साहित्यक श्रृंगार परम्पराक संगहि भक्ति परम्पराक प्रमुख स्तंभ सभमे एक प्रमुख स्तंभ आ मैथिलीक सर्वोच्च कवि मानल जाइत छथि। हिनक काव्य रचनामे मध्यकालीन समाजक धर्म, कर्म, नीति, राजनीति, सामाजिक रूपरेखा, देशक दशा-दिशा भाषाक स्वरूप आदिक प्रतिबिम्ब प्रतिबिम्बित होइत अछि। हिनका वैष्णव, शैव आ शाक्त भक्तिक सेतुक रूपमे स्वीकार कयल गेल अछि। ई संगम दुर्लभ अछि। "देसिल बयना सब जन मिट्ठा" ओरवि मातृभाषा प्रति अपन स्नेह उजागरे टा नहि कयलनि बल्कि मातृभाषाक प्रति प्रेमक मर्मके सभक समक्ष रखलनि। ओ संजीवनीक कार्य कयलक आ आइ मैथिली भाषा आ साहित्य एतेक समृद्ध आ विशाल रूपमे अपन सहृदताक कारणे विश्व साहित्य आ भाषाक मध्य स्थान स्थापित कए चुकल अछि।

—x—

Scanned with CamScanner